IJSSRA | ISSN: 3107-6238
July-September 2025 | Vol. 01 | Issue 2

इंजीनियरिंग शिक्षा में प्रवेश हेतु तैयारी कर रहे आरक्षित व अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की समायोजन स्तर का अध्ययन

डॉ. अरुण कुमार मिश्रा*

*सहायक प्राध्यापक, के. डी. एस. महाविद्यालय, जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

E-Mail: arunkumarmishra145@gmail.com
DOI: **https://doi.org/10.5281/zenodo.17317384**
Accepted on: 15/09/2025 Published on: 10/10/2025

सारांशिका:

प्रस्तुत शोध लेख इंजीनियरिंग शिक्षा में प्रवेश हेतु तैयारी कर रहे आरक्षित व अनारक्षित वर्ग के प्रतियोगी विद्यार्थियों के समायोजन पर आधारित है। यह शोध मात्रात्मक शोध प्रविधि पर आधारित है जिसमें शोधार्थी द्वारा कुल नौ शोध प्रश्नों के साथ-साथ नौ शोध परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया था। प्रस्तुत शोध पत्र में समस्त उदेश्यों को एक साथ प्रस्तुत करने पर शोध लेख की शब्द सीमा बहुत अधिक हो जा रही थी। अतः प्रस्तुत शोध पत्र में शोध के प्रथम शोध परिकल्पना इंजीनियरिंग शिक्षा में प्रवेश हेतु तैयारी कर रहे आरक्षित व अनारक्षित वर्ग के प्रतियोगी विद्यार्थियों के समायोजन की संक्षिप्त व्याख्या की गयी है। इस शोध अध्ययन में प्रतिदर्श के रूप में इंजीनियरिंग शिक्षा में प्रवेश हेतु तैयारी कर रहे प्रतियोगी छात्रों का चयन यादृच्छिक प्रतिदर्श चयन विधि द्वारा वाराणसी व प्रयागराज मंडल से किया गया है। शोध से संबंधित आंकड़ों के एकत्रीकरण के लिए शोधार्थी द्वारा टी.एस. बहुआयामी समायोजन प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। इस मापनी द्वारा एकत्रित आंकड़ों के विश्लेषण के लिए शोधार्थी द्वारा सांख्यिकीय प्रविधियों के अंतर्गत सी.आर. (C.R.) टेस्ट का उपयोग किया गया। आंकड़ों के विश्लेषण के बाद निष्कर्ष के रूप में ज्ञात हुआ कि इंजीनियरिंग शिक्षा प्रवेश हेतु तैयारी कर रहे आरक्षित व अनारक्षित वर्ग के प्रतियोगी विद्यार्थियों के समायोजन स्तर में कोई अंतर नहीं है। इस शोध के परिणाम के आलोक में निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि इंजीनियरिंग शिक्षा में तैयारी कर रहे विद्यार्थी चाहे वे इंजीनियरिंग शिक्षा हेतु चयनित हुए हो या न हुए हो वह अपने आप को किसी न किसी रूप में समायोजित कर लेते हैं।

मुख्य शब्द: *समायोजन स्तर, आरक्षण और प्रतियोगी छात्र।*

प्रस्तावना:

प्रायः एक विशेषता विश्व के सभी प्राणियों में पाई जाती है वह है परिस्थितियों के साथ समायोजन स्थापित करने की। जो प्राणी परिस्थितियों के साथ समायोजन स्थापित कर लेते हैं वह ही जीवित रहते हैं वहीं जो प्राणी परिस्थितियों के

साथ समायोजन स्थापित नहीं कर पाते हैं वे प्रायः नष्ट हो जाया करते हैं। समायोजन की यही अवधारणा मनुष्यों पर भी लागू होती है किंतु मनुष्य को प्राकृतिक परिस्थितियों के साथ-साथ उसे सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, मनोवैज्ञानिक आदि अनेक आंतरिक व वाह्य क्षेत्रों में समायोजन स्थापित करना होता है क्योंकि मनुष्य का वाह्य समायोजन के साथ-साथ आंतरिक समायोजन भी अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। मनुष्य इस पृथ्वी पर अन्य प्राणियों की भांति खाने-पीने अपनी सुरक्षा करने व बच्चे पैदा करने तक सीमित नहीं है बल्कि उसकी आंतरिक मनोदशा भी होती है तथा व्यक्ति के लिए वाह्य समायोजन से ज्यादा महत्वपूर्ण उसका आंतरिक समायोजन होता है। समायोजन किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण घटक होता है। किसी व्यक्ति का व्यक्तित्व उसकी समायोजन क्षमता से प्रभावित होता है समायोजन कोई क्षणिक प्रक्रिया नहीं है बल्कि यह सतत और आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। प्रत्येक व्यक्ति की समायोजन क्षमता भी अलग-अलग होती है कुछ व्यक्ति परिस्थितियों से शीघ्र ही समायोजन स्थापित कर लेते हैं कुछ व्यक्ति धीरे-धीरे अपनी परिस्थितियों से समायोजन स्थापित कर पाते हैं कुछ व्यक्ति तो अंत तक परिस्थितियों से समायोजन स्थापित ही नहीं कर पाते और वे चिंता, कुंठा, निराशा, हताशा से ग्रस्त हो जाते हैं और अंततः आत्महत्या कर लेते हैं या कोई अन्य गलत कार्य कर बैठते हैं। जो व्यक्ति परिस्थितियों के साथ समायोजन स्थापित कर लेते हैं वे प्रसन्नचित्त और सकारात्मक सोच वाले होते हैं और सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करते हैं।

सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा:

मिश्रा, (2009) ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन, तनाव एवं शैक्षिक निष्पत्ति पर भौगोलिक दशाओं के प्रभाव का अध्ययन किया जिनके शोध का उद्देश्य-1-विद्यार्थियों के समायोजन पर भौगोलिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन करना। 2- विद्यार्थियों के समायोजन पर जलवायु के प्रभाव का अध्ययन करना। 3- विद्यार्थियों के समायोजन पर स्थल रूपों के प्रभाव का अध्ययन करना। 4-विद्यार्थियों के तनाव व समायोजन से सहसम्बन्ध ज्ञात करना था। शोध का प्रतिदर्श 400 विद्यार्थियों पर आधारित था। समायोजन परीक्षण हेतु एच०एस० अस्थाना द्वारा निर्मित समायोजन मापनी का प्रयोग किया। उन्होंने अपने शोध निष्कर्ष के रूप में पाया कि 1- प्रयोज्यों के समायोजन शीलता पर क्षेत्र की अक्षांशीय स्थिति का प्रभाव पड़ता है जबकि देशान्तर स्थिति का छात्रों के समायोजन पर प्रभाव नहीं पड़ता है। 2-देशांतरीय स्थिति के आधार पर आगरा एवं वाराणसी जनपद के छात्रों के समायोजन अन्तर नहीं है। 3-पर्वतीय एवं मैदानी छात्रों के समायोजन में सार्थक अन्तर होता है। 4-उष्ण एवं शीतोष्ण जलवायु के छात्रों के समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर है। **सिन्दूरिया (2012)** ने प्राथमिक शिक्षा स्तर पर विकलांग विद्यार्थियों के शैक्षिक एवं सामाजिक समायोजन की समस्या का अध्ययन पर अपना

शोध कार्य किया जिनके शोध का उद्देश्य 1. परिषदीय तथा निजी प्राथमिक विद्यालयों के शारीरिक अपंग बालकों के शैक्षिक समायोजन सम्बन्धी समख्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना। 2. परिषदीय तथा निजी प्राथमिक विद्यालयों के शारीरिक अपंग बालिकाओं के शैक्षिक समायोजन सम्बन्धी समख्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना। उनके शोध अध्ययन में निष्कर्ष के रूप में प्राप्त हुआ कि 1-शारीरिक अपंग बालक निजी प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत शारीरिक अपंग विकलांग बालकों की तुलना में शैक्षिक समायोजन में अधिक समस्याग्रस्त पाए गये। 2- परिषदीय विद्यालयों के विकलांग बालकों के शैक्षिक समायोजन सम्बन्धी समस्याओं के अधिक पाए जाने के सम्भावित कारणों में परिषदीय विद्यालयों में उचित सामाजिक वातावरण का न पाया जाना अध्यापकों के सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार में कमी अभिभावकों व सहयोग सम्बन्धी उचित जिम्मेदारी के निर्वहन में कमी पायी गई। 3-अंधे विकलांग बालक व बालिकाओं में परिषदीय विद्यालयों के विकलांग बालक एवं बालिकाओं की अपेक्षा आत्महीनता की प्रवृत्ति में कमी पायी गई। 4-निजी क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत शारीरिक विकृत वाले विकलांग बालकों की अपेक्षा परिषदीय विद्यालयों में अध्ययनरत शारीरिक विकृत बाल विकलांग बालक एवं बालिकाओं की समायोजन समस्या अधिक पायीं गई। 5-विकलांग बालक-बालिकाओं की अपेक्षा कम समस्याग्रस्त दिखे। **रानी (2017)** ने अम्बाला मण्डल के सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की समायोजन का उनके दुःश्चिन्ता दबाव एवं समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन किया जिनके शोध अध्ययन में निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए। 1-सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के उच्च समस्याओं से ग्रसित विद्यार्थियों की दुःश्चिन्ता में कोई सार्थक अन्तर देखने को नहीं मिला। 2-सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के सामान्य समस्याओं से अतर ग्रसित विद्यार्थियों की दुःश्चिन्ता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। 3-सरकारी एवं निजी विद्यालयों के दबाव में सार्थक अन्तर है। 4-निजी माध्यमिक विद्यालयों के निम्न सामान्य एवं उच्च समस्याओं से ग्रसित विद्यार्थियों का उनके दुःश्चिन्ता पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर पाया गया।

शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं सार्थकता:

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और उसे समाज के नियमों का पालन करने के लिए समय-समय पर अपने जीवन में समायोजन करना पड़ता है इस प्रकार मनुष्य अपने अस्तित्व को बचाने के लिए जीवन की विभिन्न परिस्थितियों और वातावरण के साथ समायोजन करता है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हमें समायोजन की आवश्यकता पड़ती है। विभिन्न परिस्थितियों से संघर्ष कर सफलता के अन्तिम बिन्दु तक पहुँच पाने का कार्य वही व्यक्ति कर सकता है, जिसके अन्दर स्वयं को समायोजित करने की क्षमता होती है। व्यक्ति समायोजन के द्वारा ही जीवन की विभिन्न परिस्थितियों पर विजय प्राप्त

करता है। अतः शिक्षा ही वह साधन है जिसके माध्यम से व्यक्ति में समायोजन की क्षमता का विकास होता है वहीं भारतीय समाज परिवर्तनशील समाज है यहाँ समाज में कुछ न कुछ नया स्वरूप हमेशा देखने को मिलता है। इस परिवर्तन के परिप्रेक्ष्य में शिक्षा में जो परिवर्तन होने चाहिए वे परिवर्तन नहीं हो रहे हैं जिससे कई समस्याएँ जन्म ले रही हैं। वर्तमान समय में भारतीय शिक्षा एवं सेवाओं में विभिन्न प्रकार की आरक्षण व्यवस्था लागू है जिसके अंतर्गत अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों व अन्य पिछड़े वर्गों के लिए कुल मिलाकर लगभग 50% स्थान आरक्षित है। 10% स्थान आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों के लिए आरक्षित कर दिया गया है तथा क्षैतिज आरक्षण भी लागू है। भारतवर्ष में प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में प्रतियोगी विद्यार्थी इंजीनियरिंग शिक्षा में प्रवेश हेतु तैयारी करते हैं व सम्मिलित होते हैं किंतु भारतीय शिक्षा एवं सेवाओं में लागू आरक्षण व्यवस्था के चलते जहां आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों का चयन प्रायः आसानी से या कम अंक लाने पर भी हो जाता है वहीं अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों का चयन आरक्षण व्यवस्था के चलते आसानी से या आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों से अधिक अंक लाने पर भी नहीं हो पाता है दोनों वर्ग के विद्यार्थियों का समायोजन किस प्रकार का होता है जिसके कारण वे अपने आपको समायोजित कर देश के विकास में अपना सहयोग देते हैं वहीं जो प्रतियोगी विद्यार्थी अपना समायोजन नहीं कर पाते वो गलत कदम उठा लेते हैं। अतः इस अध्ययन द्वारा प्रतियोगी विद्यार्थियों में किस प्रकार समायोजन करने की क्षमता का विकास किया जा सकता है अपने आप में अत्यंत महत्वपूर्ण है जो शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं सार्थकता को सिद्ध करती है।

समस्या कथन: इंजीनियरिंग शिक्षा में प्रवेश हेतु तैयारी कर रहे आरक्षित व अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन स्तर का अध्ययन।

संक्रियात्मक परिभाषाएँ :

समायोजन- किसी लक्ष्य की प्राप्ति हेतु स्थिति को अपने अनुकूल बनाना या परिस्थिति के अनुकूल हो जाना।

आरक्षण- भारतीय संविधान के विभिन्न अनुच्छेदों के अंतर्गत अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों एवं पिछड़े वर्गों के लिए सामाजिक समानता स्थापित करने के लिए निश्चित किए गए स्थान।

प्रतियोगी छात्र- आरक्षित वर्ग व अनारक्षित वर्ग की उन प्रतियोगियों से है जो इंजीनियरिंग शिक्षा में प्रवेश हेतु तैयारी कर रहे हैं।

शोध अध्ययन के उद्देश्य:

1. इंजीनियरिंग शिक्षा में प्रवेश हेतु तैयारी कर रहे अनारक्षित वर्ग के प्रतियोगी विद्यार्थियों के समायोजन पर भारतीय शिक्षा एवं सेवाओं में लागू आरक्षण व्यवस्था के प्रभावों का अध्ययन करना।

2. इंजीनियरिंग शिक्षा में प्रवेश हेतु तैयारी कर रहे आरक्षित वर्ग के प्रतियोगी विद्यार्थियों के समायोजन स्तर पर भारतीय शिक्षा एवं सेवाओं में लागू आरक्षण व्यवस्था के प्रभावों का अध्ययन करना

शोध परिकल्पना- इंजीनियरिंग शिक्षा में प्रवेश हेतु तैयारी कर रहे आरक्षित व अनारक्षित वर्ग के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध प्रविधि- प्रस्तुत शोध अध्ययन में विवरणात्मक अनुसंधान विधि के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या एवं प्रतिदर्श - प्रस्तुत शोध अध्ययन में इंजीनियरिंग शिक्षा में प्रवेश हेतु तैयारी कर रहे वाराणसी व प्रयागराज के समस्त प्रतियोगी छात्र समष्टि का निर्माण करते हैं। चयनित जनसंख्या में से यादृच्छिक प्रतिचयन निदर्शन विधि से 150 आरक्षित व 150 अनारक्षित कुल 300 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

शोध उपकरण- वैध एवं विश्वसनीय समंकों के संकलन हेतु डॉ. टी.एस. बहुआयामी समायोजन मापन प्रश्नावली का उपयोग किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकीय विधि- प्रस्तुत शोध अध्ययन में सांख्यिकी विश्लेषण हेतु सी.आर. मूल्य परीक्षण का अनुप्रयोग किया गया, जिसका सूत्र निम्नलिखित है- $C.R. = \frac{M1 - M2}{\sqrt{\left(\frac{\sigma 1}{N1}\right)^2 + \left(\frac{\sigma 2}{N2}\right)^2}}$

CR= क्रांतिक अनुपात, σ_1 = प्रथम समूह का मानक विचलन, σ_2 = द्वितीय समूह का मानक विचलन,
N_1 = प्रथम समूह की कुल संख्या, N_2 =द्वितीय समूह की कुल संख्या, M_1 = प्रथम समूह का मध्यमान
M_2 = द्वितीय समूह का मध्यमान

इंजीनियरिंग शिक्षा में प्रवेश हेतु तैयारी कर रहे आरक्षित व अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन स्तर में अंतर का सी.आर. (C. R.) मूल्य विश्लेषण

तालिका-1:

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	C.R. मूल्य	P
आरक्षित	150	44.61	16.98	0.63	Df 2.98 .05 = 1.96 असार्थक
अनारक्षित	150	43.26	15.89		

तालिका से स्पष्ट होता है कि आरक्षित व अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन का मध्यमान क्रमशः 44.61 व 43.26 है। मानक विचलन 16.98 व 15.89 तथा मानक त्रुटि 1.81 है। उनका C.R. मूल्य 0.63 प्राप्त हुआ जो सारणी के .05 स्तर पर मान 1.96 से काफी कम होने के फलस्वरूप असार्थक है।

निष्कर्ष:

अध्ययन की प्राकल्पित शून्य परिकल्पना इंजीनियरिंग शिक्षा में प्रवेश हेतु तैयारी कर रहे आरक्षित व अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन स्तर में अंतर नहीं है, को अस्वीकृत नहीं किया जा सका। तात्पर्य यह है कि इंजीनियरिंग शिक्षा में प्रवेश हेतु तैयारी कर रहे आरक्षित व अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। ऐसा प्रतीत होता है कि जिस प्रकार आरक्षित वर्ग का विद्यार्थी अपनी योग्यता, पर्यावरण तथा शैक्षिक स्तर के आधार पर तैयारी करते हैं उसी प्रकार अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थी भी अपनी शैक्षिक योग्यता, पर्यावरण एवं शैक्षिक स्तर के आधार पर तैयारी करते हैं। अस्तु दोनों वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन स्तर में कोई सार्थक अंतर दृष्टिगोचर नहीं होता है।

शैक्षिक निहितार्थ:

1. समायोजन एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है यह विश्व के सभी प्राणियों में पाया जाता है तथा यह अनवरत चलने वाली प्रक्रिया है। किसी प्रतियोगी विद्यार्थी को दबाव में समायोजन के लिए बाध्य नहीं किया जाना चाहिए।
2. समायोजन प्रतियोगी विद्यार्थियों को कुंठा, निराशा, चिंता से निकलने में मदद करती है। प्रतियोगी छात्रों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाया जाना चाहिए न कि नकारात्मक विचारों को प्रेरित कर हताशा, निराशा, कुंठा, चिंता आदि को और अधिक बढ़ाया जाना चाहिए।
3. अनारक्षित वर्ग के प्रतियोगी विद्यार्थियों के चयन से बाहर होने पर समाज के सदस्यों, सगे-संबंधियों व मित्रों द्वारा उसे हतोत्साहित नहीं किया जाना चाहिए जिससे उनके समायोजन में समस्या आए और वे चिंता, कुंठा, निराशा से ग्रस्त होकर कोई गलत कदम उठा बैठे बल्कि उन्हें हताशा कुंठा चिंता आदि से निकलने में मदद करनी चाहिए जिससे वे शीघ्र ही अपनी स्थिति से समायोजन स्थापित कर लें।
4. आरक्षित वर्ग के चयनित विद्यार्थियों को हेय दृष्टि से नहीं देखा जाना चाहिए कि आरक्षण के चलते वे चयनित हो गए अन्यथा वे किसी काम के नहीं थे इससे आरक्षित छात्र आत्महीनता से ग्रस्त हो जायें और चयनित होकर भी उनके समायोजन में बाधा उत्पन्न हो।

5. बुद्धजीवियों को चाहिए कि वे तैयारी कर रहे प्रतियोगी विद्यार्थियों को आरक्षण के संवैधानिक प्रावधानों की आवश्यकता व महत्व से अवगत करायें।

6. संवैधानिक संस्थाओं व न्यायिक संस्थाओं को आरक्षण संबंधी संवैधानिक प्रावधानों की समीक्षा होती रहनी चाहिए।

7. सर्वजन हिताय को ध्यान में रखा जाना चाहिए किसी एक वर्ग के उत्थान के लिए दूसरे वर्ग का शोषण नहीं किया जाना चाहिए। शिक्षा एवं सेवाओं में आरक्षण की व्यवस्था इस प्रकार हो कि दोनों वर्ग (आरक्षित व अनारक्षित) वर्ग के प्रतियोगी विद्यार्थियों के समायोजन में समस्या न हो।

संदर्भ:

1. वैदिक, वी. पी. (1991). *लोहिया ने कहा था*. संकलन प्रशासन विभाग, भारत सरकार.

2. नेहरू, जे. एल. (1989). *लेटर्स ऑफ़ चीफ मिनिस्टर्स (भाग-5)*. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

3. मिश्रा, वी. के. *आरक्षण का औचित्य*. LLM लघु शोध प्रबंध. टी.डी. कॉलेज, जौनपुर

4. संसदीय बहस अंक -2

5. प्रसाद, एस. (2004). *गढ़वाल मंडल के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की समायोजन समस्याओं के मनोवैज्ञानिक कारकों का अध्ययन*, शोध-प्रबन्ध शिक्षाशास्त्र विभाग गढ़वाल विश्वविद्यालय उत्तरांचल।

6. नायक, एन. (2005). *माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन का उनकी आत्म-अवधारणा के विकास पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन*, शोध-प्रबन्ध, शिक्षाशास्त्र विभाग उत्कल विश्वविद्यालय भुवनेश्वर, उड़ीसा।

7. सिंह, आर. के. (2008). *प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत अध्यापकों की कार्य संतुष्टि, समायोजन एवं व्यावसायिक अभिवृत्ति का अध्ययन'* अप्रकाशित शोध-प्रबन्ध, शिक्षा संकाय महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय बरेली।

8. बैकेट एट अल. (2004). टीचर ऐडजेस्टमेंट टू टेक्नालोजी ओवर कमिंग कल्चर माईंडसेट्स. *जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नालोजी सिस्टम, 33*(2), 147-156.